Indian J. Soc. & Pol. 12 (02):121-126: 2025
31 JULY 2025
ISSN: 2348-0084 (PRINT)
ISSN: 2455-2127(ONLINE)

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत् विद्यार्थियों का इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति का उनकी अध्ययन आदतों के सम्बंध में अध्ययन

प्रदीप कुमार तिवारी[1], गोपाल सिंह[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उ0प्र0,भारत
[2]सहायक आचार्य,शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

इंटरनेट व सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन रहा हैं। उन्होंने हमारे संवाद करने, बातचीत करने और सामूहीकरण करने के तरीके में क्रांति ला दी है। छात्रों को इंटरनेट व सोशल मीडिया की सबसे बड़ी कड़ियां मानी जाता है जो इन एपलीकेशन का उपयोग करते हैं क्योंकि उनमें से लाखों फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्स ऐप, रिसर्च गेट, गूगल स्कॉलर ऐरिक, ऐकेडमियां आदि जैसी सोशल नेटवर्किंग साइटों पर कई घंटे बिता रहे हैं। यह अध्ययन (200) उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के नमूने से जानकारी एकत्र करने के लिए दो सर्वेक्षण मापनी का उपयोग करके जिला कानपुर नगर, में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान वर्ग कक्षाओं में उनके अध्ययन की आदतों पर इंटरनेट व सोशल मीडिया के साथ छात्रों की अभिवृत्ति की जांच करता है। काई स्कैवर का उपयोग करते हुए सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज (एसपीएसएस) पर .05 सार्थक स्तर को निर्मित परिकल्पनाओं का विश्लेषण करने के लिए अपनाया गया था। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि इंटरनेट व सोशल मीडिया के उपयोग का छात्रों के दृष्टिकोण और अध्ययनरत् कक्षाओं में उनके अध्ययन की आदतों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अध्ययन ने सिफारिश की कि छात्रों को शैक्षणिक और अन्य अवसरो दोनों के लिए सोशल नेटवर्क का उपयोग करने के लाभों और सीमाओं पर प्रबुद्ध होना चाहिए।

KEYWORDS: *माध्यमिक शिक्षा, इंटरनेट व सोशल मीडिया, अध्ययन आदत।*

प्रस्तावना

आज से लगभग 43 ईसा पूर्व कहे गये महान् रोमन दार्शनिक, राजनीतिज्ञ एवं लेखक मार्क तुलिअस सिसरो के उपर्युक्त कथन ने प्रत्येक काल, देश एवं परिस्थिति में अपनी प्रासंगिकता इस ढंग से प्रमाणित की है कि अब यह जनमानस में एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर का कोई अस्तित्व नहीं होता है, उसी प्रकार पुस्तकों का मानव–जीवन में महत्व निर्विवाद है। पुस्तकें ही वह साधन है जो ईट–पत्थर से बने हमारे कक्षा–कक्ष को ज्ञान रूपी जीवन्तता प्रदान करती हैं।

वर्तमान युग तकनीकी का युग है जिसमें पुस्तकों के किसी अन्य विकल्प की बात करना कोई निरर्थक कल्पना नहीं वरन् एक ऐसी वास्तविकता है जिससे हमारे विद्यार्थी विशेषकर किशोर इससे भलीभाति से परिचित है। इंटरनेट एक ऐसा ही विकल्प है जिसने विद्यार्थियों को कई मंच प्रदान किये हैं जिनका उपयोग वे ज्ञान प्राप्ति के स्रोत के रूप में कर सकते हैं। यही कारण है कि विद्यार्थियों को इंटरनेट पर गूगल सर्च ईंजन के माध्यम से अध्ययन सामग्रियाँ प्राप्त करते हुए सर्वत्र देखा जा सकता है।

सोशल नेटवर्किंग साइट एक ऐसी वेब आधारित सुविधा है जहाँ सामाजिक संपर्कों हेतु शारीरिक उपस्थिति अनिवार्य नहीं है। कहने–सुनने में यह असंभव लग सकता है पर अब यह आज के दौर की एक ऐसी वास्तविकता है जिसे हम प्रतिदिन फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट एवं व्हाट्सएप जैसे मोबाइल मैसेंजर पर अपने मित्रों एवं परिचितों के साथ चैटिंग के दौरान अनुभव करते हैं। आभासी दुनियाँ में पारस्परिक संवाद हेतु निर्मित ऐसी कई साइट्स एवं एप्लीकेशन है जिसमें जिन्हें सम्प्रत्यात्मक दृष्टि से सोशल मीडिया के अंतर्गत रखा जाता है।

प्रारंभ में सोशल मीडिया का मुख्य उद्देश्य परस्पर विचारों, फोटो, वीडियो एवं शैक्षिक सामग्रियों के आदान–प्रदान इत्यादि को साझा करना मात्र था परंतु कालांतर में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों द्वारा कुछ ऐसी वेबसाइट्स की आवश्यकता अनुभव की गई जहाँ वे अपने क्षेत्र से संबंधित विषय वस्तु भी सझा कर सकें। जनवरी, 2001 में अस्तित्व में आये 'विकिपीडिया' ने इस आवश्यकता की पूर्ति कर लोगों की सोशल मीडिया के उपयोग संबंधी आदतों को भी इंटरनेट की भांति बदलकर रख दिया है।

स्पष्ट है कि हमारा किशोर विद्यार्थी वर्ग जो कि सोशल मीडिया का प्रमुख उपयोगकर्ता है, प्रायः दो प्रकार के उद्देश्यों को साथ लेकर चलता है। सामाजिक उद्देश्यों से प्रेरित होकर जहाँ ये विद्यार्थी फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट पर पारस्परिक अंतःक्रियाएं कर रहे हैं वहीं शैक्षिक उद्देश्यों से अभिभूत हो विकिपीडिया जैसे विश्वकोष से अध्ययन सामग्रियाँ भी एकत्रित कर रहे है। ऐसे में सोशल मीडिया के सामाजिक उपयोग का विद्यार्थियों

1: Corresponding Author

के सामाजिक व्यवहार पर एवं शैक्षिक उपयोग का अध्ययन आदतों पर प्रभाव पडना स्वाभाविक ही है।

उक्त चर्चा में शोधार्थी का आशय यह कदापि नहीं है कि विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन का मूल कारण 'फेसबुक' एवं अध्ययन आदतों में परिवर्तन का प्रधान कारण 'विकिपीडिया' एवं सोशल मीडिया ही है। वस्तुतः ये उदाहरण समस्या के उक्त दोनों पक्षों को स्पष्ट करने हेतु दिये गये हैं वास्तव में देखा जाये तो सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति सभी रूपों में यथा–सोशल नेटवर्किंग साइट्स, मीडिया शेयरिंग साइट्स ऑनलाइन इन साइक्लोपीडिया, ब्लॉगर्स, मैसेंजर आदि का उपयोग विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार उनकी एकेडमिक अभिप्रेरणा उपलब्धि एवं अध्ययन आदतों को रूप में सम्मिलित रूप से प्रभावित करता है।

आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में भारत के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया ने अपना स्थान बनाया है। आज सुरक्षा पहरे की भांति केवल देश–विदेश में ही नहीं बल्कि घर–घर में अपनी पहुंच बना चुका है। खास बात यह है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में यह एक अहम हिस्सा भी बन चुका है। वर्तमान में सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ता जा रहा है। हालांकि इसके दुष्प्रभाव भी काम नहीं है। प्रौद्योगिकी ने पिछले दशक के मुकाबले उच्च रिकॉर्ड दर्ज किए हैं। संचार की गतिशीलता बदल गई है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का आकर्षण और प्रभाव ही कहा जा सकता है।

शोधकर्ता अपने इस शोधकार्य के आधार पर विद्यार्थियों का इंटरनेट व सोशल मीडिया के अभिवृत्ति के प्रति उनकी अध्ययन आदतों को समझने का प्रयास कर रहा है कि वास्तव में सोशल मीडिया शिक्षा पर अपना प्रभाव डालकर विद्यार्थियों के अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों में किस प्रकार का परिवर्तन कर रही है और यह किस प्रकार से आवश्यक व महत्वपूर्ण है, अगर उनके कारणों को खोजने में सफल हो सका तो वास्तव में उसका शोधकार्य शिक्षा जगत के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। यदि हम कुछ ऐसे जिम्मेदार कारकों की खोज कर सके जो छात्रों के शिक्षण से संबंधित कार्यों को प्रभावित करते हैं तो यह एक बहुत महत्वपूर्ण योगदान होगा इसके आधार पर हम भविष्य की दृष्टि से यह विचार कर सकेंगे की विद्यार्थियों का सोशल मीडिया के अभिवृत्ति वह शैक्षिक अभिप्रेरणा उपलब्धि एवं उनके अध्ययन आदतें को समझने में आए दिन किस प्रकार का परिवर्तन हो रहा है। सकारात्मक हो रहा है या नकारात्मक हो रहा है। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उसकी उपयोगिता पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह भी देखा जा सकता है कि किया गया अध्ययन व शोध कार्य समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। किस प्रकार से वह आगे होने वाले शोध कार्य में अपनी सार्थकता को सिद्ध करता है। उपयुक्त जानकारी रूपी दृष्टिकोण को मध्य नजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक व औचित्यपूर्ण है।

उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सहसम्बध का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सहसम्बध का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सहसम्बध का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध है।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध है।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध है।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण

शोध कार्य से संबंधित साहित्य के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने निम्नलिखित साहित्य का अध्ययन किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंधित साहित्य

- **ओगुगुओ, बेसिल सी0 ई0, अजुओनुमा, जूलियट. ओ0 , अजुबुके, रोजलाइनय , एने, कैथरीन यू0 , अट्टा, फ्लोरेंस ओ0 , ओको, चिडिम्मा जे0 (2020)** इन्फ्लुएंस ऑफ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट अकेडमिक अचीवमेंट। परिणाम मे पाया गया कि छात्र अक्सर नए दोस्त बनाने, अपने असाइनमेंट और अन्य शैक्षिक सामग्रियों के स्रोत के बारे में शोध करने, नवीनतम रुझानों और समाचारों के साथ अद्यतित रहने के लिए सोशल मीडिया में संलग्न होते हैं। शोध से यह भी पता चला है कि छात्र सोशल मीडिया पर रोजाना औसतन 2 से 4 घंटे समय बिताते हैं।
- **एर्कोग, इ. एवं टेजर, एम. (2017)** द इफेक्ट ऑफ सोशल मीडिया यूज ऑन द ऐकडेमिक सक्सेस एंड ऐटिटूड ऑफ स्टूडेंट्स। छात्र के सोशल मीडिया एटिट्यूड, स्केल स्कोर औसत और ग्रेड स्तर के बीच तुलना के अनुसार एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। छात्र के सोशल मीडिया एटिट्यूड, स्केल स्कोर औसत और सोशल मीडिया अकाउंट की उपलब्धता के बीच तुलना के अनुसार एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। हालांकि, उम्र, शैक्षणिक औसत और छात्र के सोशल मीडिया अभिवृति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

➢ **मोर्फोइटौ, आर0 एन0 और डेमेट्रियौ, एम0 (2017)** के शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निकोसिया विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सोशल मीडिया के उपयोग संबंधी आदतों तथा उच्च शिक्षण संस्थानों के चयन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना था। शोध परिणामों में पाया गया कि इस विश्वविद्यालय के 95.01 प्रतिशत विद्यार्थी परंपरागत मीडिया की अपेक्षा किसी न किसी सोशल साइट्स पर सक्रिय है अधिकांश विद्यार्थी सोशल मीडिया का प्रयोग मुख्ता दो देश यथा सामाजिक अंतः क्रिया तथा सूचनाओं के आदान–प्रदान हेतु करते हैं शोध परिणाम यह भी इंगित करते हैं कि उच्च शिक्षा हेतु संस्थान के चयन हेतु विद्यार्थी पहले सोशल मीडिया पर उसके बारे में आवश्यक जानकारी एकत्रित करते हैं तद्नुपरांत वहां प्रवेश लेने के संबंध में कोई निर्णय लेते हैं।

➢ **क्रिस, एल0 ए0 (2015)** ने केन्याई विश्वविद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोशल मीडिया के प्रभाव संबंधी अन्वेषणा को अपने शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य निरूपित किया। शोध परिणामों में पाया गया की 28% विद्यार्थी फेसबुक का 67% विद्यार्थी व्हाट्सएप का एवं 5% विद्यार्थी ट्विटर के उपयोग को वरीयता देते हैं 38% विद्यार्थियों ने माना कि सोशल मीडिया उनकी अध्ययन आदतों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है, 4% विद्यार्थियों ने दृढ़ता पूर्वक इस बात को स्वीकार किया इसके विपरीत 42% विद्यार्थियों का यह भी मानना था कि सोशल मीडिया ने उनके भीतर अच्छी आदतों के विकास में योगदान दिया है।

➢ **अलमु, ए0 और बुहारी, बी0 ए0 (2014)** ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर मोबाइल सोशल नेटवर्क के प्रभाव का अध्ययन किया इस शोध पत्र का उद्देश्य सोकोटो महानगर में माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मध्य मोबाइल सोशल नेटवर्क उपयोग के रुझान का आकलन करना तथा उनके अकादमी प्रदर्शन पर इनके प्रभावों को जानना है। यह प्रयोग अनुसंधान 14–19 आयु वर्ग के छात्रों से मिलकर कुछ चयनित माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित किया गया शोध परिणामों से पता चला है कि छात्रों को अधिकांश स्कूल गतिविधियों की अपेक्षा अपेक्षा करनी पड़ती है। इसलिए यह सिफारिश की गई है कि मोबाइल सामाजिक नेटवर्क के छात्रों के लिए शिक्षक गतिविधियों का समर्थन करने के लिए एक बहुत अच्छा उपकरण हो सकता है बेयर्ते उन्हें उचित मार्गदर्शन के साथ माता–पिता और शिक्षकों से निगरानी भी प्राप्त हो।

राष्ट्रीय संबंधित साहित्य

➢ **लावुरी (2019)** ने भारतीय छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया नेटवर्क के प्रभाव का अध्ययन किया। पाया कि सोशल मीडिया नेटवर्क का छात्रों पर उनके अकादमिक प्रदर्शन के प्रति सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अधिकांश छात्रों ने Google (20%) और Youtube (18%) जैसे सोशल मीडिया नेटवर्क का उपयोग कियाय वे स्मार्ट फोन (36%) और लैपटॉप (33%) जैसे ई गैजेट्स का उपयोग करके साइटों को ब्राउज कर रहे थे। भारतीय छात्रों को अपने अकादमिक संबंधित ज्ञान में सुधार के लिए इन नेटवर्कों का उपयोग किया गया था और ये मंच समाज में एक बेहतर सामाजिक व्यक्ति बनाने में मदद करते हैं और छात्रों को सोशल साइट्स के साथ अधिक समय बिताने से अधिक निराशा मिलती है। इसलिए छात्रों को ब्राउज करते समय सोशल नेटवर्क से सावधान रहना चाहिए

➢ **मोंटाघेम, एस. (2017)** ने कर्नाटक राज्य में ईरानी विद्यार्थियों पर सोशल नेटवर्किंग साइट के प्रभावों पर पी0एच0डी स्तरीय शोध कार्य किया। इस शोध कार्य के मुख्य उद्देश्य सोशल नेटवर्किंग साइट्स के संदर्भ में विद्यार्थियों की आदतों, जुड़वा, पैटर्न उपयोग तथा संतुष्टि का अध्ययन करना था। इस शोध कार्य हेतु राज्य के चार संभागों बेंगलुरु मैसूर बेलगांव गुलबर्गा से दत्त संकलन किए गए इस प्रकार कुल चार संख्याओं तथा मानविकी विज्ञान प्रबंधन प्रबंधन तथा मेडिकल से 480 विद्यार्थियों (प्रत्येक संकाय में से 120) अंतिम रूप से न्यायाधीश में सम्मिलित किए गए दत्त संकलन सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत किया गया जिसमें प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया शोर परिणाम में पाया गया कि 57.5% विद्यार्थी प्रतिदिन एक घंटा सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर वित्त करते हैं इन विद्यार्थियों का सबसे ज्यादा जुड़ाव फेसबुक से पाया गया अधिकांश विद्यार्थी इनसाइट्स का प्रयोग सूचना प्राप्ति तथा विचार साझा करने के लिए करते हैं। साथ ही इनकी सोशल मीडिया की उपयोग संबंधी आदतों एवं जुड़ाव भी एक समान नहीं पाया गया।

➢ **किशन और सरोजा (2015)** ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच स्कूल के माहौल और उपलब्धि की जांच की। परिणामों से पता चला कि सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों और सरकारी छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था, जो सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों की तुलना में हीन थे। पुरुष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया और महिला छात्रों ने पुरुष छात्रों की तुलना में बेहतर उपलब्धि प्रेरणा दिखाई।

➢ **वानी और मसीह (2015)** ने उपलब्धि प्रेरणा पर एक अध्ययन कियाः कुछ जनसांख्यिकीय चर के संदर्भ में एक अध्ययन। परिणामों ने बताया कि अधिकांश नमूना विषयों में उपलब्धि प्रेरणा का औसत स्तर दिखाया गया है। परिणामों से यह भी पता चला कि लड़कियों ने लड़कों की तुलना में उपलब्धि प्रेरणा स्कोर पर बेहतर प्रदर्शन किया।

➢ **प्रजापति, ए0 एन0 (2014)** ने बालकों की अध्ययन आदतों, अकादमी दुश्चिंता तथा शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय शिक्षा, क्षेत्र तथा अभिभावकीय सहभागिता के प्रभावों का अध्ययन किया। इस शोध कार्य के लिए केंद्रीय तथा उत्तरी गुजरात के 640 बालको तथा उनके अभिभावकों को न्यार्दश के रूप में सम्मिलित किया गया। दत्त संकलन के लिए अभी बाकी है सहभागिता मापनी, अध्ययन आदत सूची तथा एकेडमिक दुश्चिंता मापने का प्रयोग किया गया। शोध परिणामों में पाया गया कि कम एवं अधिक अभिभावकीय सहभागिता वाले बच्चों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया है यही

अंतर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों तथा स्नातक एवं स्नातक से कम शिक्षा वाले अवयवों के बच्चों की अध्ययन आदतों में भी पाया गया।

➢ **चौहान, एस. (2002)** के शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के परस्परिक संबंधों का अध्ययन करना तथा इसका उनकी अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव की पड़ताल करना था। इस अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के कक्षा 6 और 7 के 200 विद्यार्थियों तथा उनकी माता को न्यार्दश के रूप में सम्मिलित किया गया। दत्त संकलन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत सभी चरों के लिए उपलब्ध मानकीकृत उपकरण प्रयुक्त किए गए। शोध परिणाम में स्वयं को स्वीकृत तथा अस्वीकृत समूह में मानने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया लेकिन माताओं की ओर से वर्गीकृत स्वीकृत तथा अस्वीकृत समूह के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण के अधार पर प्राप्त निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति का उनकी अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं अध्ययन आदत से संबंधित साहित्य सर्वेक्षण का अध्ययन किया और उपर्युक्त संबंधित साहित्य के अध्ययन के फलस्वरुप शोधकर्ता ने यह पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति का उनकी अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं अध्ययन आदत से संबंधित कोई भी उचित शोध अध्ययन नहीं किया गया है। अतः उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार पर शोधकर्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शोध करना आवश्यक समझा और इस समस्या का चुनाव किया।

शोध प्रविधि –

अध्ययन मे एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान डिजाइन को अपनाया। आबादी मे उ0प्र0 राज्य के जिला कानपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। सरल यादृच्छिक सैम्पल तकनीक का उपयोग करते हुए, जिले के दस उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कुल (200) विद्यार्थियों का चयन किया गया था। सैम्पल विद्यालयों में से प्रत्येक विद्यालय से (20) विद्यार्थियों का चयन किया गया था। डेटा संग्रह के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला उपकरण शोधकर्ताओं द्वारा एक **स्व–विकसित मापनी इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति और किशोर अध्ययन आदत मापनी–विजयलक्ष्मी और श्रुति नारायण** है, स्व–विकसित मापनी को पांच विशेषज्ञों द्वारा मान्य कारा लिया है। मापनी में (35) आइटम शामिल है। जिनकी प्रतिक्रियाओं को पाँच लिकर्ट स्केल सिस्टम पूर्ण सहमत (एसए), सहमत (ए), अनिश्चित (एन सी) असहमत (डी), पूर्ण असहमत (एसडी) पर संरचित किया गया था। मापनी उपकरण को विकसित करने में, अध्ययन के अनुरूप शोधकर्ताओं द्वारा किए गए समान शोध के उपलब्ध उपकरण से प्रश्नों को अनुकूलित किया गया था। मापनी की विश्वसनीयता स्प्लिट–हाफ विश्वसनीयता विधि का उपयोग करके निर्धारित की गई है और पियर्सन प्रोडक्ट मोमेंट (पीपीएम) सहसंबंध सूत्र का उपयोग विश्वसनीयता सूचकांक निर्धारित किया गया। जिसने 0.87 का गुणांक प्राप्त किया था। इसे विश्वसनीय माना जाता है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं का परीक्षण

प्रथम परिकल्पना परीक्षण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध है।

H1: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध होता है।

H0: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध नही होता है।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सहसंबध प्रदर्शित तालिका।

कुल छात्र	चर	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
100	इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदत	0.055344	अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध

उपर्युक्त के अवलोकन से स्पष्ट है कि इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य में सहसंबंध गुणांक मान 0.0553 प्राप्त हुआ है। हमारी शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध नही नही है। अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध होता है। स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदत में अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।

द्वितीय परिकल्पना परीक्षण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध है।

H1: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध होता है।

H0: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध नही होता है।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सहसंबध प्रदर्शित तालिका।

कुल छात्राएं	चर	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
100	इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदत	0.289	निम्न धनात्मक सहसंबंध

उपर्युक्त के अवलोकन से स्पष्ट है कि इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य में सहसंबंध गुणांक मान 0.289 प्राप्त हुआ है। हमारी शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध नही नही है। अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध होता है। स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदत में निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।

तृतीय परिकल्पना परीक्षण उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध है।

H1: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध होता है।

H0: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध नही होता है।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सहसंबध प्रदर्शित तालिका।

कुल विद्यार्थियों	चर	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
200	इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदत	0.164	अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध

उपर्युक्त के अवलोकन से स्पष्ट है कि इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य में सहसंबंध गुणांक मान 0.164 प्राप्त हुआ है। हमारी शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध नही है। अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बध होता है। स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदत में अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।

निष्कर्ष एवं उसकी व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत् विद्यार्थियों का इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति का उनकी अध्ययन आदतों के सम्बंध में अध्ययन"** किया गया। शोध समस्या के सुझावात्मक उत्तर के रूप में विकसित की गई परिकल्पनाओं के परीक्षण के पश्चात शोधकर्ता इस स्थिति में आ गया है कि वह परीक्षित परिकल्पनाओं के आधार पर कुछ निष्कर्ष निकाल सके।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदतों के मध्य अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं। उपर्युक्त संपूर्ण प्रदतों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की इंटरनेट व सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति एवं अध्ययन आदत के मध्य अत्यंत निम्न धनात्मक व छात्रों के अध्ययन आदत के मध्य अत्यंत निम्न धनात्मक एवं छात्राओं के अध्ययन आदत के मध्य निम्न धनात्मक सहसंबंध है।

अतः हम कह सकते है कि विद्यार्थियों में इंटरनेट व सोशल मीडिया कि वजह से विद्यार्थियों के अध्ययन आदत पर प्रभाव पड़ता है। लेकिन यह पता लगाना मुश्किल हो जाता है कि इंटरनेट व सोशल मीडिया के वह कौन—कौन से कारक जो विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन को प्रभावित करते है। जैसे विद्यालय में अध्यापकों की शिक्षण कार्य के प्रति उदासीनता, शिक्षण कार्य में प्रयुक्त भौतिक संसाधन की अनुपलब्धता, पुर्नबलन, गैर शैक्षणिक कार्य में जोर देना इत्यादि के कारण विद्यार्थियों में तनाव रहता है।

REFERENCES

गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, अलका (2015). *उच्च शिक्षा मनोविज्ञानरू सिद्धांत एवं व्यवहार.* शारदा पुस्तक भवन।

गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, अलका (2018). *अनुसंधान संदर्शिका.* शारदा पुस्तक भवन।

अस्थाना, पंकज (2006). *माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की गति उपलब्धि पर आकांक्षा स्तर, चिंता तथा अध्ययन की आदतों के प्रति प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन* (अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध)। शिक्षा विभाग, सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर।

गुप्ता, दीप्ति (2018). *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अकादमिक चिंता से विद्यालय की अकादमिक चिंता एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन* (अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध)। शिक्षा विभाग, सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर।

देव, कृष्ण (2014). *परिषदीय विद्यालय एवं सरस्वती विद्या मंदिर के उत्तर प्रदेश उच्च प्राथमिक स्तर से विद्यालय की अकादमिक चिंता एवं जिज्ञासा का शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन* (अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध)। शिक्षा विभाग, सी.एस. जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर।

अलमु, ए., एवं बुहारी, बी. ए (2014). मोबाइल सोशल नेटवर्किंग का माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर प्रभाव। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंप्यूटर साइंस एंड इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी,* 5(5), 6333–6335।

क्रिस, एल. ए (2015). केन्या विश्वविद्यालय के स्नातक छात्रों की अध्ययन आदतों पर सोशल मीडिया का प्रभाव। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नावेल रिसर्च इन ह्यूमैनिटी एंड सोशल साइंस।*

एर्कांग, इ., एवं टेजर, एम (2017). छात्रों की अकादमिक सफलता और दृष्टिकोण पर सोशल मीडिया के उपयोग का प्रभाव। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस – रिसर्च, पोंटे,*73(7),179–191

ओगुगुओ, बी. सी. ई., अजुओनुमा, जे. ओ., अजुबुके, आर., एने, के. यू., अट्टा, एफ. ओ., एवं ओको, चिडिम्मा जे (2020). छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सोशल मीडिया का प्रभाव। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इवैल्यूएशन एंड रिसर्च इन एजुकेशन*। 9(4), 1000–1009.

पाल, एस. के., एवं मिश्रा, के. एस (1991). वंचित पारिस्थितिकी से आने वाले किशोरों की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, शैक्षिक अभिप्रेरणा, सामाजिक व्यवहार प्रतिरूप एवं नैतिक निर्णयों का अध्ययन। *5वीं शैक्षिक अनुसंधान सर्वेक्षण, एन.सी.ई.आर.टी.,* नई दिल्ली, 2, 166–167।

चौहान, एस (2002). अध्ययन की आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में पारिवारिक संबंधों का अध्ययन (मास्टर शोध प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय)।